RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक अक्षर वार्ता

मूल्यः 25 /- रूपये

वर्ष-16 अंक-12 (अक्टूबर - 2020)
Vol - XVI Issue No - XII
(October-2020)

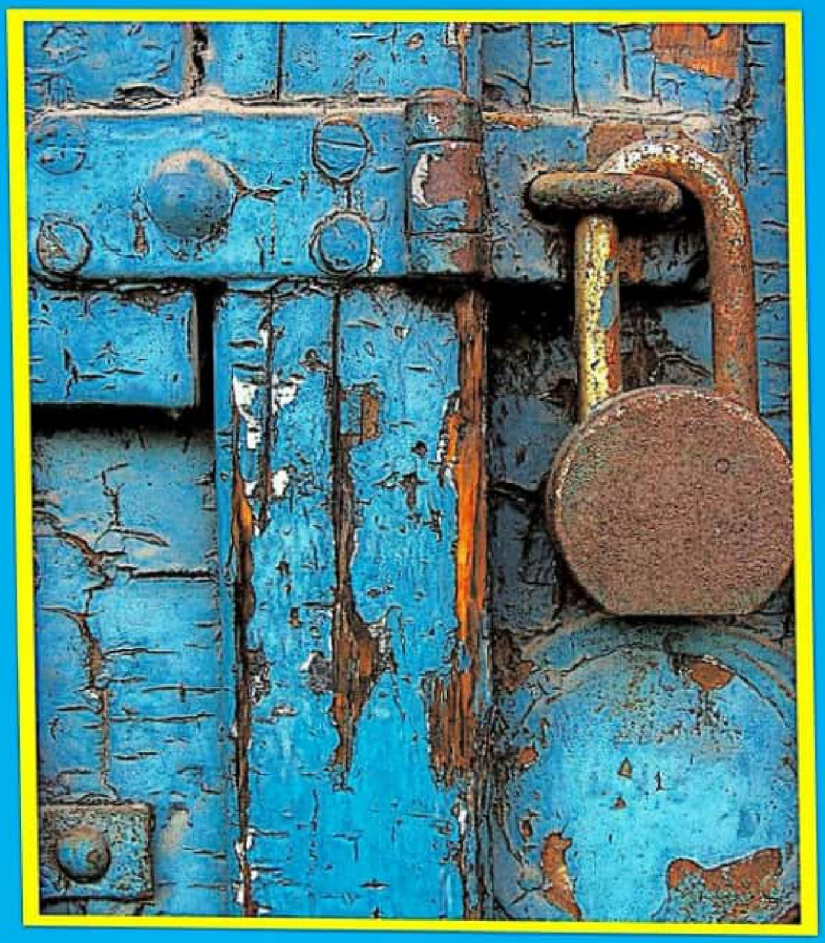

ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 2.891
indexed in the International Institute of Organized Research (I2OR) database
Monthly International Referred Journal & Peer Reviewed
कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका
» aksahrwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

Scanned with CamScanner

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

Impact Factor - 2.891

वर्ष-16 अंक-12 , अक्टूबर - 2020
Vol - XVI
Issue No. XII
Octuber 2020

aksharwartajournal@gmail.com

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

संपादक- डॉ.मोहन बैरागी

संपादक मण्डल :-

डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)

प्रो.राजश्री शर्मा

डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)

सहयोगी सम्पादक:- डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)

सह सम्पादक- डॉ.भेरुलाल मालवीय

डॉ. अंजली उपाध्याय

डॉ. पराक्रम सिंह

डॉ. रूपाली सारये

डॉ. विदुषी शर्मा

डॉ. ख्याति पुरोहित

डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रो को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड मे भेजे। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करे। ०. Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 650/-रूपये एवं प्रकाशन/पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक:-

Corporation Bank,
Account Holder- Aksharwarta
Current Accont NO.
510101003522430
IFSC- CORP0000762,
Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

भुगतान की मुल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है। Email: aksharwartajournal@gmail.com

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत
फोन :- 0734-2550150 मोबा :-8989547427

Subscription Form (Photocopy of this form may be used, if required)

I/ We wish to subscribe the Journals. Total Amount : 650/- (Six hundred Fifty only)(INR) and/or Registration Fee. All fee and Subscriptions are payable in advance and all rates include postage and taxes. Subscribers are requested to send payment with their order whenever possible. Issues will be sent on receipt of payment. Subscriptions are entered on an annual basis and are subject to renewal in subsequent years.

Subscription from:.....to.....SUBSCRIBER TYPE:(Check One) Institution( )/Personal ()Date:.....Name/Institution and Address :.....City : .....State :.....PinCode..... Country ..... PhoneNo .:..... MobNo.:..... Mail id.....

PAYMENT OPTION:

DD in the favor of "AKSHARWARTA" payable at UJJAIN.

DD No.: .....Dated : .....for Rupees (in words) .....Drawn on .....Any other option Specify :.....

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

» शिव प्रसाद सिंह और उनकी कहानियों में मुखरित मानवीय मूल्य
डॉ. डी. उमादेवी 06

» नारी शोषण का वैश्विक स्वरूप और 'आओ पेपे घर चले'
सरिता यादव, प्रमोद कुमार श्रीवास्तव 09

» वर्तमान समय में भारतीय कवियों का मौलिक चिंतन
कृपाशंकर 11

» वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति पर उसका प्रभाव
डॉ. अरूणा चौधरी 14

» शेखर जोशी के साहित्य में पर्वतीय जन जीवन और पर्यावरण
मोहम्मद नयाज़ पाशा, डॉ. नीरजा 17

» समकालीन हिंदी कविताओं में अभिव्यक्त भूमंडलीकरण के दौर के पारिस्थितिक चिंतन
विम्सी विल्यम्स 19

» आधा गाँव...! विभाजन की विभीषिका एवं मानसिक अन्तर्द्वन्द की महागाथा
अभिलाषा सिंह 22

» हिन्दी आलोचना में डॉ. रामविलास शर्मा का योगदान
अमन कुमार 25

» मार्क्सवादी आलोचना के सशक्त हस्ताक्षर- रामविलास शर्मा
अनुराधा कुमारी 28

» डॉ. शंकर शेष के नाटकों में मिथकीय चेतना
मुकेश कुमार, निर्देशक- डॉ. गोपीराम शर्मा 31

» 'शंकरायण' में युग-बोध और लोक-मंगल
डॉ. भरत सिंह 34

» संगीत, नृत्य में संस्थागत पद्धति का उदय एवं उनका स्तर
प्राची पांडे 37

» मालवी लोक संगीत की विभिन्न विधाएँ
महेश यादव 39

» व्यंग्य विधा की साहित्यिक यात्रा
बुशरा खान 41

» ध्यान की अवधारणा जीवन के मोक्ष तक
श्रीमति सरिता पाण्डेय, निर्देशक- डॉ. हेमंत नामदेव 44

» हिन्दी सिनेमा और आर्थिक सरोकार
उमेश कुमार 46

» सामाजिक न्याय
डॉ. एम. डि. अलिखान 49

» भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की बदलती राजनीतिक स्थिति
नगेन्द्र पाल 51

» मध्यकालीन कविता में सामाजिक प्रश्न
अनिरूद्ध कुमार यादव 55

» हिन्दी फिल्मों में जातिप्रथा के विभिन्न आयामों का चित्रण
उमेश कुमार 59

» रामचरित मानस के संदर्भ में योगसूत्र का अंतरंग
श्रीमति सरिता पाण्डेय, निर्देशक- डॉ. हेमंत नामदेव 64

» डॉ. मायानंद मिश्र के उपन्यासों में वैदिक युग का सामाजिक जीवन
सुनीता साह 66

» इक्कीसवीं सदी में आदिवासी विमर्श: कविता के संदर्भ में
मो. वारिस 70

» कुड़ियाँजान की प्रासंगिकता
डॉ. भारती अग्रवाल 73

» कृषक- कविः केदारनाथ अग्रवाल
डॉ. रीता कुमारी 76

» महादेवी वर्मा: नारी-चेतना की 'अद्वितीय विचारक'
डॉ. कैलाश कुमार 79

» 'शिशुपालवध' महाकाव्य में उल्लिखित राजधर्म की सामाजिक महत्ता
प्रीति शर्मा 81

» झीनी-झीनी बीनी चदरिया: नारी पात्र और सामाजिक सोच
रीम कुमारी 83

» लघु कुटीर उद्योग एवं महात्मा गाँधी के विचार
डॉ. भावना उज्जालिया 85

» जनपद फिरोजाबाद में शिक्षण संस्थाओं के प्रसार का सामाजिक विकास पर प्रभाव- एक भौगोलिक अध्ययन
शुभ्रा कुलश्रेष्ठ 87

» सूचना के अधिकार 2005 की वर्तमान समय में प्रासंगिकता, दशा व दिशा
डॉ. भूपेन्द्र कुमार, डॉ. प्रदीप कुमार जामुलकर 89

» छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण से मतदान व्यवहार में महिलाओं की भूमिका
डॉ. डी. एन. सूर्यवंशी, डॉ. प्रदीप जामुलकर 91

» PRAGMATIC ELEMENTS IN THE LITERATURE OF MULKRAJ ANAND
Mukesh Kumar Meena, Dr. (Prof.) D.P. Mishra 94

» INNAVATIVE IDEAS OF TEACHING EFFICIENCY IN TEACHER EDUCATION
Qaisur Rahman and Tanwir Yunus 99

» THE MISERY AND THE MATURITY
Mukesh Kumar Meena, Dr. (Prof.) D.P. Mishra 108

Scanned with CamScanner

अक्षर वार्ता
ISSN 2349-7521
Vol - XVI, Issue - XII, October - 2020
"AKSHARWARTA" Monthly International Referred Journal

हिन्दी आलोचना में डॉ. रामविलास शर्मा का योगदान

अमन कुमार

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

हिन्दी आलोचना में डॉ.रामविलास शर्मा एक महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की परम्परा का समृद्ध विकास उनकी आलोचना में है। रामविलास शर्मा ने अपने आलोचना के शस्त्र मार्क्सवाद से अवश्य लिए हैं लेकिन उसकी धार और उसकी मारक क्षमता उन्होंने स्वयं निर्मित की, जिसमें भारतीय साहित्य परम्परा की अविरल धारा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'लोक-मंगल' के अवल सिद्धांत के सहारे आलोचना की एक नयी जमीन उन्होंने हिन्दी साहित्य को प्रदान की।

साहित्यिक आलोचना को लोक के सबसे अधिक निकट ले जाने में आपका योगदान अन्यतम है। तुलसीदास रामविलास शर्मा के सर्वाधिक प्रिय कवि हैं। आलोचना में उनके प्रतिमान आचार्य शुक्ल के काव्य-मानदण्डों के काफी निकट है। आचार्य शुक्ल रामविलास शर्मा के आदर्श आलोचक हैं। वहीं आधुनिक कवियो मे निराला केदारनाथ अग्रवाल आपके पसंदीदा कवि हैं। कथा साहित्य में प्रेमचंद उनके प्रिय कथाकार हैं। भारतेंदु और महावीर प्रसाद द्विवेदी को रामविलास शर्मा ने नवजागरण के अग्रदूतों के रूप में प्रतिष्ठित किया है। डॉ. रामविलास शर्मा ने आलोचना में वही कार्य किया जो प्रेमचंद ने हिन्दी कथा साहित्य में किया यानी आलोचना को आम जनता के बहुत पास लेकर चले गये। रामविलास शर्मा ने अपनी विचारधारा को कभी अपनी आलोचना में बोझिल नहीं होने दिया बल्कि इन्होने साहित्यिक आलोचना को पाठक के लिए सुगम बना दिया। रामविलास शर्मा की साहित्यिक मान्यताएँ जीवन से गृहीत है। उनके लिए वह मनुष्य के इन्द्रियबोध से बाहर की वस्तु नही है। कला के सम्बन्ध में उनकी स्पष्ट मान्यताएँ हैं कि मनुष्य का इन्द्रिय बोध, उसके भाव, उसके विचार उसका सौन्दर्यबोध कला की विशेषवस्तु है। रामविलास शर्मा ने अपने निबन्धो में साहित्य, कला सौन्दर्य और आलोचना सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये हैं। इन विचारों का सामंजस्य उनके द्वारा की गई व्यावहारिक आलोचना में दिखाई देता है। 'आस्था और सौन्दर्य' में उन्होंने कला के सम्बन्ध में अपनी मान्यताएँ स्पष्ट की है। उनके अनुसार 'कला की विषयवस्तु न वेदान्तियों का ब्रह्म है, न हेगल का निरपेक्ष विचार। मनुष्य का इन्द्रियबोध, उसके भाव उसके विचार, उसका सौन्दर्यबोध कला की विषयवस्तु है।" सौन्दर्य और सौन्दर्यबोध की व्याख्या आलोचना के लिए अत्यंत जटिल विषय रहा है। चाहे भारतीय विद्वान हों या पाश्चात्य विद्वान सभी ने सौन्दर्य की व्याख्या अपने-अपने अनुसार की है परन्तु किसी एक निष्कर्ष पर सहमति अब तक नहीं बन पायी है। हिंदी आलोचना में आचार्य शुक्ल ने सौन्दर्य की वस्तुवादी व्याख्या की थी। इसी कार्य को डॉ. रामविलास शर्मा ने आगे बढ़ाया है। उन्होंने हिंदी आलोचना में ज्ञानकांड किया है। इतनी व्यापक और विस्तृत आलोचना हिंदी साहित्य में किसी ने नहीं की है। उन्होंने कई मामलों में आचार्य शुक्ल से भी बढकर हिंदी की सेवा की है। उन्होंने उन्ही साहित्यकारों को महत्व दिया जिन्होंने जनता के दुःख दर्द और उसकी पक्षधरता की बात अपने साहित्य में की है- डॉ.रामविलास शर्मा की आलोचना में एक बात जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है वह यह है कि उन्होंने उसी साहित्यकार को महत्व दिया जिसकी रचना का स्वर जनवादी है और उसकी रचनाओ में जनता का जातीय साहित्य बसता हो। भारतेन्दु-युग के रचनाकारों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा-''भारतेन्दु युग का साहित्य हिन्दी-भाषी जनता का जातीय साहित्य है, वह हमारे जातीय नवजागरण का साहित्य है। भारतेन्दु युग की जिन्दादिली, उसके व्यंग्य और हास्य, उसके सरल-सरस गद्य और लोक-संस्कृति से उसकी निकटता से सभी परिचित हैं। ये उसकी जातीय विशेषताएँ हैं। अंग्रेजी साम्राज्यवाद और अंग्रेजी साहित्य एक ही वस्तु नहीं है। भारतेन्दु युग के साहित्य ने न केवल अंग्रेजी से वरन् बँगला साहित्य से भी प्रेरणा पायी है। लेकिन उसके साहित्य की जड़ इसी धरती में हैं और ऊपर बताई हुई उसकी जातीय विशेषताएँ उसकी अपनी हैं, मौलिक हैं।''[2]

रामविलास शर्मा के आलोचना-सिद्धांत:-डॉ.रामविलास शर्मा ने प्राचीन समाज और साहित्य का मूल्यांकन करने की मार्क्सवादी पद्धति की व्याख्या करते हुए लिखा, ''यह आवश्यक नहीं कि शोषक वर्ग ने जिन नैतिक अथवा कलात्मक मूल्यो का निर्माण किया है वे सभी शोषण मुक्त वर्ग के लिए अनुपयोगी हों -प्राचीन साहित्य के मूल्यांकन में हमें मार्क्सवाद से यह सहायता मिलती है कि हम उसकी विषयवस्तु और कलात्मक सौन्दर्य को ऐतिहासिक दृष्टि से देखकर उनका उचित मूल्यांकन कर सकते हैं।''[3] आलोचक के रूप में डॉ.रामविलास शर्मा उसी रचना को महत्व देते हैं जो वस्तुवादी चिंतन पर आधारित हो। उनके अनुसार आलोचक वही है जिसने द्वंद्वात्मक पद्धति का सहारा लेकर विषयवस्तु का विश्लेषण किया हो। उसने रचनाकार की सीमाओं की भी पहचान की हो तथा वह रचना में प्रगतिशील और विकासमान तत्वों को पहचान कर उसे सामने ला सका हो। इन्हीं प्रतिमानों के कारण आचार्य शुक्ल उनके आदर्श आलोचक है। शुक्लजी की आलोचना पद्धति की प्रशंसा करते हुए डॉ.रामविलास शर्मा लिखते हैं- ''शुक्लजी की आलोचना गम्भीर है, इसलिए कि उसका आधार वस्तुवादी दृष्टिकोण है। शुक्लजी की गम्भीरता का दूसरा कारण उनकी तर्क और चिन्तन पद्धति है। इस पद्धति को हम द्वन्द्व नाम दें तो अनुचित न होगा। विरोधी लगने वाली वस्तुओं का सामंजस्य पहचानना, उन्हें गतिशील और विकासमान देखना, संसार के विभिन्न भौतिक और मानसिक व्यापारों का परस्पर सम्बन्ध स्थापित करके उनका अध्ययन करना इस पद्धति की विशेषताएँ हैं।''[4] डॉ.रामविलास शर्मा के आदर्श आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल हैं। रामविलास शर्मा ने 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना' नामक

Scanned with CamScanner